

संस्कृत आख्यानसाहित्ये विचारव्यवस्थार उपादान अनुसन्धान

पृथिवीर सब देशे आबाल-वृद्ध-बनितार मने गल्ल-काहिनिर आकर्षण चिरन्तन कालेर। मानुषेर এই सहजात प्रवृत्तिर कारणेई सृष्टि हय्जे आख्यान, उपाख्यान, कथा, गल्लेर। संस्कृत बाङ्गुयेर सकल स्फेत्त्रेई आख्यान-उपाख्यानेर पदचारणा देखा यार। कोथाओ भिन्न भिन्न स्वादेर एकाधिक आख्यान निये एकटि ग्रन्थ रचित हय्जे आबार कोथाओ एकटि आख्यानेर मध्ये एकाधिक भिन्न भिन्न स्वादेर उपाख्यान वर्णित हय्जे। এই आख्यानगुलि मूलतः मानवेतर तीर्यक प्राणीदेर निये रचित हलेओ एदेर द्वारा मानव समाजेर दैनिक जीवन्-यापनचित्रेई चित्रित हय्जे। काहिनिगुलिते चरित्रदेर दैनन्दिन कड़ुचाय धरा पड़ेछे अपराधमूलक नाना कार्यकलाप-कखनो प्रत्यक्षे, कखनो परक्षे। अपराधीके शास्ति प्रदान, पारस्परिक विवादेर निरसन इत्यादिदर द्वारा आख्यानगुलिदर मध्य दिये विचारव्यवस्थार ये छवि धरा पड़े ता विशेष आलोचनादर दावि राखे।

• पूर्वकृत शोधकार्येदर अतिसंक्षिप्त विवरणः-

संस्कृत आख्यानग्रन्थ निये एताबं याँरा गबेष्णा करेछेन् तादेर मध्ये अबिस्मरणीय हलेन् P. Peterson; C.Lassen; J. Hertel; F. Edgerton प्रमुख। एरा मूलतः *पञ्चतन्त्र*, *हितोपदेश* प्रभृति ग्रन्थेदर समीक्षामूलक सम्पादना करेछेन्। Keith, Winternitz प्रभृति व्यक्तिवर्ग आख्यानसाहित्ये राजनीतिदर प्रसङ्ग निये आलोचना करलेओ विशेष कोनो ग्रन्थेदर दुई एकटि निर्वाचित गल्लेई ता सीमाबद्ध थेकेछे। करुणासिन्धु दास महाशयेर *‘पञ्चतन्त्रे राजा वनाम राजसेवक प्रसङ्ग’*, *‘संस्कृत कथासाहित्ये लोकजीवन्’*, नृसिंहप्रसाद भादुडीर *‘शुकसप्तति’* निबन्धगुलिओ उल्लेखयोग्य। এই सकल ग्रन्थगुलि, निबन्धगुलि सबई आख्यानसाहित्ये राजनीति, शासनव्यवस्था इत्यादि विषयके अबलम्बन करेई रचित हय्जे, सेखाने आख्यान-उपाख्यानगुलिते विचारव्यवस्थारसम्पर्कित आलोचना देखा यार ना। L.Sternbach प्रणीत *Juridical Studies in Ancient Indian Law* ग्रन्थेदर आलोच्य विषयवस्तु आख्यानग्रन्थेदर विचारव्यवस्था हलेओ मूलतः

पक्षगतत्र ओ हितोपदेश ग्रन्थदुटिर अवलम्बनेइ विचारव्यवस्थार स्वरूपटि तुले धरा हयैछे। अन्यान्य आख्यानग्रन्थगुलिते आलोकपात करा हयनि। एछाडाओ, ड. पुरीप्रिया कुण्डुर चौरसमीक्षा ग्रन्थटिते कयैकटि निर्वाचित आख्यानग्रन्थ येमन हितोपदेश, कथासरिङ्गागर ओ दशकुमारचरिते चौर्यापराधेर दण्डव्यवस्थाटि आलोचित हयैछे। अन्यान्य अपराध तथा प्राचीन भारतेर विचारव्यवस्थार सार्विक स्वरूपटि उल्लिखित हयनि। रोहिनी धर्मपाल महाशयार अपराध ओ अपराधीर पुरनोनतुन काहिनि ग्रन्थटिते विचारव्यवस्था सम्वन्धिय आलोचना थाकलेयओ संस्कृत आख्यान ग्रन्थगुलिके आलादा गुरुत्त्व दिये, सेखाने प्राचीन भारतेर अपराध, अपराधी, दण्डव्यवस्था सम्पर्कित आलोचना करा हयनि। ड. देवदास मणुल महाशय गल्ले गल्ले राजनीतिर हातेखडि ग्रन्थटिते मोटामुटिभावे समग्र आख्यानसाहित्येर भित्तिते प्राचीनभारतेर राजतान्त्रिक शासनव्यवस्थार चलचित्रटि तुले धरेछेन, किन्तु समग्र आख्यानसाहित्ये प्राचीन भारतेर विचारव्यवस्थार अपरापर विषय सेखाने आलोचित हयनि। वर्तमान सन्दर्भे संस्कृत आख्यानसाहित्येर अन्तर्गत विभिन्न ग्रन्थे उल्लिखित आख्यान-उपाख्यानगुलि थेके प्राचीनभारतेर विचारव्यवस्थार स्वरूपटि यथासाध्या तुले धरार चेष्टा करा हयैछे।

• गवेषणार उद्देश्य

आख्यान-उपाख्यानगुलिते प्राचीन भारतेर समाज चित्रटि सुन्दरभावे प्रस्फुटित हयैछे। स्वाभाविकभावेइ सेखाने समाजे प्रचलित न्याय-अन्याय, अपराध, दुर्नीति इत्यादिर प्रतिफलन रयैछे। संस्कृत आख्यानसाहित्येर अन्दरे लुकिये थाका प्राचीन विचारव्यवस्थार स्वरूप अवस्वेषण करा वर्तमान गवेषकेर उद्देश्य। अनुसन्धानेर ऋत्रे ये उद्देश्यगुलि स्थिर करा हयैछे सेगुलि हल-

१. आख्यानगुलिते प्राप्त नाना प्रकार अपराधे लिप्त हण्यार पिछने कान सामाजिक प्रेक्षापट छिल – ता उपलब्धि करा।

२. आख्यानगुलिंर माध्यमे अपराधीदेर विचारव्यवस्था ओ शान्तिविधान केमन छिल ?

७. स्मृतिशास्त्रे वर्णित विचारव्यवस्था-दण्डव्यवहार साथे आख्यान साहित्ये उपलब्ध विचारपद्धति कतटा सादृश्यपूर्ण छिल ? सेविषये आलोकपात करा ।

८. आख्यानगुलिते संघटित जघन्य अपराधे अपराधीदेर की स्मृतिविहित दण्डप्रदान हत ना की अभिनव पद्धतिर उद्भव हय - ता विस्लेषण करा ।

वर्तमान गवेषणा निबन्धटिके बोधसौकर्यार्थे निम्नलिखित छयटि अध्याये विभक्त करे आलोचना करा हयैछे ।

१. भूमिका

२. प्रथम अध्याय- संस्कृत आख्यान साहित्येर उद्भव ओ क्रमविकाश

३. द्वितीय अध्याय- स्मृतिशास्त्रे व्यवहारमातृका एकटि समीक्षा

४. तृतीय अध्याय- स्मृतिसाहित्य ओ आख्याने विचारपद्धति ओ विचारक

५. चतुर्थ अध्याय- धनमूलक व्यवहारविधि ओ आख्यानसाहित्ये तार प्रयोग प्रसङ्ग

६. पञ्चम अध्याय- हिंसामूलक विवादप्रसङ्ग शास्त्र ओ आख्यानसाहित्ये

७. षष्ठ अध्याय- प्रकीर्ण व्यवहारविधि ओ आख्यानसाहित्ये प्रतिफलित अपराध प्रवणता

८. उपसंहार ।

• गवेषणार सीमाबद्धता

आलोच्य गवेषणासन्दर्भटि संस्कृत आख्यानसाहित्ये विचारव्यवहार उपादान अनुसन्धान हलेओ मूलतः पद्मोत्तम, हितोपदेश, पुरुषपरীक्षा, शुकसंश्लोकथा, बेतालपद्मविंशति, सिंहासनद्वित्रिंशिका, कथासरित्सागर ओ दशकुमारचरित एहि आख्यानग्रन्थगुलिर ओपरेहि आलोकपात करा हयैछे । विशाल आख्यानसाहित्येर अन्यान्य ग्रन्थगुलिके ग्रहण करा हयनि । स्मृतिशास्त्रेर ग्रन्थगुलिर मध्ये मनुसंहिता, याज्ञवल्क्यसंहिता, बृहस्पतिस्मृति, कात्यायनस्मृति, नारदस्मृति ओ

বিষ্ণুধর্মসূত্রকে অনুসরণ করা হয়েছে। কিছু কিছু ক্ষেত্রবিশেষে মনুসংহিতার প্রসিদ্ধ টীকাগ্রন্থ মন্বর্থমুক্তাবলী ও মনুভাষ্য এবং যাজ্ঞবল্ক্যসংহিতার মিতাক্ষরা টীকাগ্রন্থটিকেও প্রয়োজন মতো আলোচনার অঙ্গীভূত করা হয়েছে। গবেষণাসন্দর্ভটির আলোচনা অগ্রসর হয়েছে বিবাদপদ অনুযায়ী। সেখানে আলোচনার সুবিধার্থে আখ্যানগ্রন্থগুলির সময়কাল অনুযায়ী সেগুলি আলোচনার অঙ্গীভূত করা হয়নি।

❖ প্রথম অধ্যায়- সংস্কৃত আখ্যান সাহিত্যের উদ্ভব ও ক্রমবিকাশ

এই আলোচনা অতি সংক্ষিপ্তাকারে উপস্থাপিত হয়েছে। যেহেতু এর বিষয়বস্তু বহু আলোচিত। তাই সেখানে মূলতঃ বৈদিক সাহিত্য থেকে রামায়ণ-মহাভারত-পুরাণ তথা বৌদ্ধ সাহিত্যের বিভিন্ন আখ্যান-উপাখ্যানের সমন্বয়ে যেভাবে সংস্কৃত আখ্যান সাহিত্যটি ক্রমবিকশিত হয়েছে তা অতিসংক্ষেপে বলা হয়েছে। এছাড়াও আলোচ্য অধ্যায়টিতে আখ্যান গ্রন্থগুলির সংক্ষিপ্ত পরিচয় দেওয়া হয়েছে।

❖ দ্বিতীয় অধ্যায়- স্মৃতিশাস্ত্রে ব্যবহারমাতৃকা একটি সমীক্ষা

অন্যের উক্তি বিরোধিতা করে কোনো বস্তুকে নিজের বলে দাবি করাই ব্যবহার।^১ শিষ্টের পালন ও দুষ্টির দমন ছাড়া প্রজাপালন সম্ভব নয়। আর ব্যবহারদর্শন ছাড়া দুষ্টির চিহ্নিতকরণ এবং তার শাস্তিবিধান সম্ভব নয়। যে পদ্ধতিতে নানা সন্দেহ নিরসন করা হয় তাকেই বলা হয় ব্যবহার। স্মৃতিশাস্ত্রকারগণ প্রজাপালনকারী রাজার অন্যতম কর্তব্যরূপে ব্যবহারদর্শনের কথা উল্লেখ করেছেন। আলোচ্য অধ্যায়টিতে নির্বাচিত স্মৃতি গ্রন্থগুলির ভিত্তিতে ব্যবহারদর্শনের স্বরূপটি আলোচিত হয়েছে। সেখানে চতুষ্পাদব্যবহার, বিবাদপদসমূহ, বিচারসভার গঠন, প্রমাণ সমূহের গুরুত্ব তার প্রয়োগপদ্ধতি ও বিচারব্যবস্থা সম্বন্ধীয় প্রাসঙ্গিক বিবিধ তথ্যাবলী আলোচিত হয়েছে।

^১ অন্যবিরোধেন সাত্ত্বসম্বন্ধিতয়া কথনং ব্যবহারঃ। মিতাক্ষরা, ২.১

❖ তৃতীয় অধ্যায়- স্মৃতিসাহিত্য ও আখ্যানে বিচারপদ্ধতি ও বিচারক

প্রবৃত্তি ও রিপূর প্রভাব চিরকালই অমোঘ, তার প্রভাব এড়ানো কোনো কালেই সহজ ছিল না। অপরাধ আছে, অপরাধ ছিল, অপরাধ থাকবে। তাই মানব জীবনের সাথে অঙ্গাঙ্গিভাবে জড়িত সাহিত্য কীর্তিগুলিতেও অপরাধ, অপরাধী, অপরাধের নিবৃত্তি, অপরাধের শাস্তি ইত্যাদির প্রতিফলন দেখা যায়- আখ্যান গ্রন্থগুলিও এর ব্যতিক্রম নয়। আখ্যান-উপাখ্যানগুলিতে বিভিন্ন অপরাধের দৃষ্টান্ত যেমন রয়েছে তেমনি তার শাস্তিব্যবস্থা সম্পর্কেও আলোচনা দেখা যায়। সেখানে সমাজের সাধারণ জনবাসীর পাশাপাশি উচ্চস্থানীয় ব্যক্তি, সম্মাননীয় বলে পরিচিত ব্যক্তি, এমনকি বিচারক তথা বিচারকার্যে নিযুক্ত ব্যক্তি, রাজকর্মচারী সকলের অপরাধ প্রবণতার কথাই উল্লিখিত হয়েছে। রাজসভার প্রশাসনিক পদে আসীন ব্যক্তিগণ যেমন বিচারসভায় উপস্থিত সভ্যগণ, গণক, লেখক ও অন্যান্য পদাধিকারী ব্যক্তিগণ তথা স্বয়ং বিচারকের দুর্নীতিপরায়ণতার চিত্রও বিভিন্ন কাহিনিতে প্রস্ফুটিত হয়েছে। এর পাশাপাশি বিভিন্ন কাহিনির মাধ্যমে আখ্যানগুলিতে বিচারসভার গঠন সম্পর্কে একটি সুস্পষ্ট ধারণা পাওয়া যায়। কে বা কারা বিচারকার্যে অধিকারী, কারা সহকারী, তাদের কর্তব্য কী এগুলি কোথাও স্মৃতিতে উল্লিখিত ন্যায়ালয়ের সাথে হুবহু মিলে যায়। আলোচ্য অধ্যায়টিতে বিভিন্ন আখ্যানগ্রন্থগুলিতে বিচারসভার স্বরূপ, পদাধিকারী ব্যক্তিগণের যোগ্যতা-আবশ্যিক গুণাবলী, চতুষ্পাদের দ্বারা ব্যবহার নিষ্পত্তির দৃষ্টান্ত, বিভিন্ন প্রমাণগুলির স্বরূপ বিশ্লেষণ ও উদাহরণ সম্পর্কিত যে তথ্যগুলি পাওয়া যায় তা আলোচিত হয়েছে। যেমন- *পঞ্চতন্ত্রের* ‘শশ-কপিঞ্জলকথা’ আখ্যানটি থেকে বিচারকের গুণাবলী তথা কে বিচারক হওয়ার যোগ্য ও অযোগ্য, বিচারক কীভাবে বিচার করবেন সে সম্পর্কে জানা যায়।^২ আবার *কথাসরিৎসাগরের* রত্নপ্রভা লঙ্ঘকের নবম তরঙ্গের একটি আখ্যান থেকে বিচার সভায় সভ্যের গুরুত্ব তথা কার্যক্ষমতা সম্পর্কে জানা যায়।^৩ প্রমাণের পাশাপাশি অপরাধীনির্ণয়ে আখ্যানগুলিতে শপথের বিশেষ গুরুত্ব দেখা যায়। আখ্যানগুলিতে কোথাও ধর্মের নামে কোথাও দৈব সম্পর্কিত পবিত্র দ্রব্যাদি স্পর্শ করে

^২ সুধাকর মালবীয়, *পঞ্চতন্ত্র*, পৃ.৪৯৪-৪৯৬

^৩ জগদীশলাল শাস্ত্রী, *কথাসরিৎসাগর*, পৃ.১৯৬

শপথের দৃষ্টান্ত দেখা যায়। কোথাও বিচারকমণ্ডলী অভিযুক্তকে শপথ গ্রহণ করতে আদেশ দিয়েছেন আবার কোথাও অভিযুক্ত নিজেই শপথ করে নিজের নিরপরাধীতা প্রমাণে প্রয়াসী হয়েছে। *হিতোপদেশের* সুহৃদভেদে পঞ্চম কথায় নাপিতের স্ত্রী নিজের সতীত্বের প্রমাণ করতে গিয়ে নিজেই দেবতার শপথ করেছে।^৪ আবার *দশকুমারচরিতের* উপহারবর্মাচরিতে দেখা যায় উপহারবর্মা বিকটবর্মাকে অগ্নিকে সাক্ষ্য করে শপথ করতে আদেশ দিয়েছেন।^৫ আলোচ্য অধ্যায়টিতে আখ্যানগ্রন্থগুলি থেকে প্রাপ্ত বিচারব্যবস্থার এই সকল অপরাপর বিষয়গুলি উল্লিখিত হয়েছে।

❖ চতুর্থ অধ্যায়- ধনমূলক ব্যবহারবিধি ও আখ্যানসাহিত্যে তার প্রয়োগ প্রসঙ্গ

বিবাদপদগুলিকে স্মৃতিশাস্ত্রকারগণ মূলতঃ দুই ভাগে বিভক্ত করেছেন- ধনমূলক বিবাদপদ ও হিংসামূলক বিবাদপদ। আলোচ্য অধ্যায়টিতে আখ্যানসাহিত্যে প্রাপ্ত ধনমূলক বিবাদপদগুলি আলোচিত হয়েছে। ধনমূলক বিবাদপদগুলির মধ্যে সর্বপ্রথম ঋণাদান বিবাদপদটি আলোচিত হয়েছে। ঋণাদান শব্দটিতে দুটি শব্দ আছে, ঋণ ও আদান। ঋণাদান করে তা আদায় করার উপায় যেমন ঋণাদান প্রকরণে আলোচিত হয়েছে তেমনি ঋণের অর্থ অধমর্ণ প্রদান না করলে তার দণ্ডবিষয়ক আলোচনাও করা হয়েছে। আখ্যান-উপাখ্যানগুলির বিভিন্ন কাহিনীতে ঋণাদান তথা ঋণ আদায় সম্পর্কিত নানা আলোচনা চোখে পড়ে। *শুকসপ্ততিকথার* পঞ্চপঞ্চসত্তমকথায় ঋণ বিষয়ক বেশ কিছু তথ্যাদি মেলে যা থেকে আলোচ্য বিবাদপদ সম্পর্কে বেশ কিছু নিয়মবিধি অনুমান করা যায়।

বিক্রীত দ্রব্যের অসম্প্রদানই হল- বিক্রীয়াসম্প্রদান। আখ্যানগুলিতে বিক্রীয়াসম্প্রদান এই বিবাদপদটির একাধিক দৃষ্টান্ত মেলে। *কথাসরিৎসাগরের* রত্নপ্রভা লম্বকের তৃতীয় তরঙ্গের 'ভবশর্মার কাহিনী'তে ক্রেতাকে ছলনা করে অভীষ্ট বস্তু বিক্রয় না করে অন্য দ্রব্য বিক্রয় করার

^৪ সত্যনারায়ণ চক্রবর্তী, *হিতোপদেশ*, পৃ.-৭৬

^৫ তারাচরণ ভট্টাচার্য, *দশকুমারচরিত*, পৃ.২৪৮

ঘটনা দেখা যায়। শুকসপ্ততিকথার বত্রিশসংখ্যক আখ্যানেও বিক্রেতা কর্তৃক প্রতারণার দৃষ্টান্ত দেখা যায়।

অনুশয় কথার অর্থ হল পশ্চাত্তাপ, অনুশোচনা। কোনো পণ্য ক্রয় করে ক্রেতার অনুশোচনা হলে তার কী করণীয়, কী তার অধিকার এই সম্পর্কে স্মৃতিতে বিশেষ কিছু নিয়ম নির্ধারিত হয়েছে। আখ্যানগুলিতেও ক্রীতানুশয় বিবাদের একাধিক দৃষ্টান্ত পাওয়া যায় যেখানে ক্রেতাকে পণ্য দ্রব্য ক্রয় করার পরে অনুশোচনাবশতঃ দ্রব্যটি বিক্রেতাকে প্রত্যর্পণ করতে দেখা যায় এবং বিক্রেতা অসম্মত হলে বিবাদের নিষ্পত্তির জন্য ন্যায়ালয়ে গমন করতেও দেখা যায়। কথাসরিৎসাগরের লাবাণক লম্বকের ‘দেবদাসবৃত্তান্ত’ আখ্যানটিতে এমনই এক দৃষ্টান্ত চোখে পড়ে। এই আখ্যানটিতে স্মৃতি বিহিত ক্রীতানুশয় বিবাদপদটির একাধিক বিধির প্রতিফলন দেখা যায়। এক্ষেত্রে ক্রেতা যথেষ্ট পর্যবেক্ষণ করে দ্রব্য ক্রয় করা সত্ত্বেও নির্দিষ্ট সময় উত্তীর্ণ হওয়ার পরেও দ্রব্যটি প্রত্যর্পণ করতে চেয়েছেন, বিক্রেতা তা অস্বীকার করায় উভয়ে ন্যায়ালয়ের শরণাপন্ন হয়েছে। বিচারে রাজা যে বিধান দিয়েছেন তা নারদকৃত ক্রীতানুশয় সম্বন্ধি বিধিরই প্রতিফলন বলা যায়।^৬

‘প্রণষ্টস্বামিক রিক্খ’- অন্যের হারিয়ে যাওয়া ধন কেউ পেলে তা প্রত্যর্পণ সম্বন্ধিয় একাধিক বিধি-নিষেধ আখ্যানগুলিতে দেখা যায়। স্বয়ং যে দ্রব্যটির মালিক নয় এমন কোনো দ্রব্য কেউ পেলে তা রাজাকে জানাতে হত। যদি কেউ রাজাকে না জানিয়েই নিজে লব্ধ দ্রব্য ভোগ করতো তবে তা ছিল দণ্ডনীয় অপরাধ। পঞ্চতন্ত্রের কাকোলুকীয়মের চতুর্দশ সংখ্যক আখ্যানে এমন একাধিক তথ্যাদির সন্ধান মেলে। আলোচ্য আখ্যানটিতে এই অপরাধের জন্য সর্বচ্চ দণ্ড প্রাণদণ্ডও হতে পারে এমন সম্ভাবনার কথাও উল্লিখিত হয়েছে। দশকুমারচরিতের অপহারবর্মাচরিতেও এমন

^৬ কথাসরিৎসাগর, পৃ.৭১

ড. নারদস্মৃতি, ৪.৯.৪

দৃষ্টান্ত দেখা যায়। মনু অপরের হারিয়ে যাওয়া দ্রব্য যে নিজের বলে মিথ্যা দাবি করে তার সমপরিমাণ অর্থ দণ্ডের শাস্তির কথা উল্লেখ করেছেন।^৭

স্বামী শব্দের অর্থ হল পশুর মালিক। পাল শব্দের দ্বারা পশুদের রক্ষায় নিযুক্ত রক্ষক বা পালক। এই দুই এর মধ্যে সৃষ্ট বিবাদকে স্বামিপালবিবাদ বলা হয়। পঞ্চতন্ত্র গ্রন্থের লক্ষপ্রণাশতন্ত্রের ‘ঘণ্টোষ্ট্রকথা’ আখ্যানটিতে পালকের বেতন ব্যবস্থা সম্পর্কে জানা যায়। প্রসঙ্গতঃ উল্লেখ্য বেতন নিয়েও স্বামী ও পালকের মধ্যে বিবাদ হতে পারে তাই স্মৃতিতে আলোচ্য বিবাদপদটির আলোচনায় পালকের বেতন সম্বন্ধীয় একাধিক বিধি দেখা যায়। পশু রক্ষার জন্য নিযুক্ত ব্যক্তির প্রধান কার্যই হল পশুগুলিকে নিরাপদে স্বামীর গৃহে ফেরৎ নিয়ে আসা কিন্তু সে যদি তার দায়িত্ব যথাযথভাবে পালন করতে অসমর্থ হয় তবে তাকে উপযুক্ত দণ্ড পেতে হত।

দত্তাপ্রদানিক প্রকরণটি হল দান সম্বন্ধীয়। নারদের মতে অন্যায়ভাবে কোনো বস্তু দান করে তা ফেরত নেওয়া – এ বিষয়ে যে বিবাদ তাকে বলা হয় দত্তাপ্রদানিক।^৮ বিভিন্ন আখ্যান-উপাখ্যানগুলিতে দান সম্বন্ধীয় একাধিক নিয়মবিধি দৃষ্ট হয়। দানের দ্বারা দানকর্তার স্বস্বত্ত্ব নিবৃত্তি দ্বারা দ্রব্যটিতে দানগ্রহীতার স্বত্ত্ব উৎপন্ন হয়। তাই যে বস্তুটি দান করা হচ্ছে তা দাতার হওয়া আবশ্যিক। যদি তা না হয় তবে দাতা দোষী বলে বিবেচিত হন। নিজের নয় এমন দ্রব্য দান করা অপরাধ, দশকুমারচরিত্রের অপহারবর্মাচরিত থেকে এমনটা জানা যায়। স্মৃতিতে দেয়-অদেয়রূপ উল্লিখিত যে দ্রব্যগুলির তালিকা মেলে তা বিশ্লেষণ করলে দেখা যায় যোগ্য দানের অন্যতম শর্তই হল দাতার ঐ নির্দিষ্ট দ্রব্যে স্বস্বামিত্ব।

❖ পঞ্চম অধ্যায় - হিংসামূলক বিবাদপ্রসঙ্গ শাস্ত্র ও আখ্যানসাহিত্যে

এই অধ্যায়টিতে হিংসামূলক বিবাদপদ বাকপারুষ্য, দণ্ডপারুষ্য, স্তেয়, সাহস ও স্ত্রীসংগ্রহণ এই বিবাদপদগুলি নিয়ে আলোচনা করা হয়েছে। উক্তবিবাদপদগুলি আখ্যান গ্রন্থগুলিতে

^৭ মনুসংহিতা, চ. ৩২

^৮ নারদস্মৃতি, ৪.১

कीभावे दृष्ट হয়েছে, की तार दण्डविधि ता उल्लेख करार पाशापाशि स्मृतिते आलोच्य विवादपदगुलि सम्पर्के ये विवादविधि उक्त হয়েছে ताओ उल्लिखित হয়েছে।

बृहस्पति ये कोनो प्रकार अप्रिय उक्तिकेइ वाकपारुष्य बलेछेन। स्मृतिशास्त्रेर न्याय आख्यानग्रन्थगुलितेओ कटुकथा बले किंवा कुव्यवहार द्वारा अपर व्यक्तिर मने आघात देओयाके अत्यन्त गर्हित कर्म बले माना হয়েছে। विभिन्न काहिनि द्वारा एमन आचरणेर कुप्रभाव तुले धरार पाशापाशि आख्यानगुलिते एमन आचरणकारीके भर्त्सना करार दृष्टान्त देखा যায় एवं सकल ক্ষेत्रेই एमन आचरण थेके विरत থাকार उपदेश देओया হয়েছে। स्मृतिर न्याय वाकपारुष्येर कठोर दण्डविधान आख्याने दृष्ट ना हलेओ, ता अपराध बलेइ विवेचित হয়েছে। ये वाक्य अप्रीतिकर, अनिष्टकर, अथथायथ- ता कारो थेकेइ शोना उचित नय। *सिंहासनद्वित्रिंशिकार* चतुर्थ उपाख्याने एमन उपदेशइ पाओया যায়। पत्नी, माता किंवा गृहेर कोनो स्त्रीके उद्देश्य करे अपशब्द प्रयोगेर दृष्टान्त आख्यान-उपाख्यानगुलितेओ मेले। *वेतालपक्षविविंशति*ग्रन्थेर प्रथम उपाख्याने राजकुमारेर वन्दु राजकुमारेर स्त्री सम्पर्के 'स्यैरिणी' एइरूप अपशब्द प्रयोग करते देखा যায়। निजेर स्त्री सम्पर्के एमन शब्द श्रवण मात्रइ राजकुमार तार तीव्र प्रतिवाद करेछेन एवं परमप्रिय वन्दुके जानिये दियेछेन कोनो स्त्रीर सम्पर्के एमन उक्ति न्यायानुगत नय।^९ राजकुमारेर एमन उक्तिद्वारा सहजेइ बोवाा যায় ये न्यायालयेर नियमे एमन कार्य निषिद्ध। *हितोपदेशेर* सन्धि विभागेर अष्टम कथाय ब्रह्मणेर निन्दाकारी व्यक्तिर दण्ड सम्पर्के आलोचना देखा যায়। विभिन्न आख्यान-उपाख्यानगुलिते गुरु, साधु, महाजन, सज्जन-सम्माननीय व्यक्ति, ब्रह्मण, पिता-माता, ये कोनो पूजनीय ओ मानी व्यक्तिर प्रति अनुचित आचरण तथा साधारण मानुषेर प्रतिओ कुव्यवहार सम्पर्कित शक्ति विधि सम्पर्के आलोचना देखा যায়।

काउके कोनो अस्त्र वा अस्त्रद्वारा आघात करा हले ताके दण्डपारुष्य बला हय। कोनो व्यक्ति, पशु तथा वृक्षादिके आघात करा स्मृतिशास्त्रेर विचारे येमन एकटि गुरुतर अपराध, आख्यानओ तार व्यतिक्रम नय। अपरके शारीरिकभावे आघात करा तथा जघन्य द्रव्य इच्छाकृतभावे

^९ दामोदर बा, *वेतालपक्षविविंशति*, पृ.-८

निष्केप करा- এই अपराधটির दृष्टान्त ও তার शक्ति आख्यानগুলিতে দেখা যায়। स्मृतिशास्त्रे যেমন दण्डविधिनिर्दिष्ट করে दण्डपारुष्य नामक এই विवादपदটি থেকে समाजকে मुक्त করার प्रचेष्टा দেখा যায় संस्कृत आख्यानसाहित्येও एकই प्रयास चोखे पड़े। दशकुमारचरित्तरे विश्रुतचरिते दण्डपारुष्यके एकटि अन्यतम दोष बले उल्लेख करा হয়েছে। पक्षतज्जेर काकोलुकुकीयमेर 'कपोतलक्ककथा' गल्ले प्राणी हिंसाकारी ब्यक्तिके दुराचारी बले समोधित करा হয়েছে एवं एमन ब्यक्तिर साथे समाजे कारो कोनो सम्पर्क থাকे ना - तार एमन शक्तिर कथा उल्लेख करा হয়েছে।^{१०} आलोच्य ग्रन्थेरइ अपर एकटि ग्रन्थे मनुष्येतर कोनो प्राणीके आघात कराओ दणुनीय अपराध ता स्पष्टतः उल्लिखित হয়েছে। स्मृतिशास्त्रेओ मनुष्येतर प्राणीके इष्टक किंवा पाषाण द्वारा आघाते मध्यमसाहस दणु निर्धारित হয়েছে।^{११}

वर्तमाने आमरा Violence बलते या बुद्धि साहसशब्दटिर द्वाराओ तई बुबते हबे। अभिधाने साहसके एकटि क्लीबलिङ्गवाची शब्द बलाा হয়েছে। सेखाने साहसेर अर्थओ कराा হয়েছে - Over hasty, Inconsiderate, Rashness इत्यादि।^{१२} स्मृतिशास्त्रानुयायी बलपूर्वक अपरेर द्रव्य हरण करई साहस।^{१३} दर्पेर साथे सहसा ये कर्म कराा हय तई साहस बले विवेचित हय इहा एकटि दणुनीय अपराध। संस्कृत आख्यानसाहित्येर एकाधिक गल्ले स्मृतिशास्त्रेर व्यवहार अध्याये आलोचित एई साहस अपराधटिर निदर्शन मेले। सेखानेओ स्मृतिर न्याय साहस अपराधकारीर प्रभूत दणु विहित হয়েছে। हत्या, दस्युबुद्धि, परस्त्रीहरण, अपरेर द्रव्यादि अपहरण, जीवहिंसा, शिशुहत्यासह एकाधिक साहस अपराधेर दृष्टान्त ओ तार शक्ति सम्पर्के आख्यानगुलि थेके जानाा यय। आख्यानसाहित्ये शिशु हत्याकारीर सबिशेष निन्दा कराा হয়েছে एवं निन्दनीय एई अपराधेर अत्यन्त पीडाजनक मतुयदणु देओयाा হয়েছে। बेतालपक्षविंशतिर तृतीय उपाख्याने स्त्री हत्याकारीर अतिशय निन्दा कराा হয়েছে एवं एई कर्मके अधर्म बले उल्लेख कराा হয়েছে। मनु शिशु

^{१०} नैव कश्चित् सुहृत्स्य न सख्यन्ती न बाक्ववः।

स तैः सर्वैः परित्यक्तस्तेन रौद्रेण कर्मणा।। पक्षतज्ज, पृ. ५२९

^{११} पाषाणेन मध्यमम्। विष्णुधर्मसूत्रे, ५.२९

^{१२} मनीयार उइलियाम, संस्कृत इंग्लेजी डिक्शनारी, पृ-१२१२

^{१३} याज्ञवल्क्यसंहिता, २.२३०

হত্যাকারীকে প্রাণদণ্ড দিতে বলেছেন।^{১৪} কেবল পুরুষ নয় স্ত্রী-জাতিও নানাবিধ সাহস কার্যের সাথে যুক্ত থাকতো তার নিদর্শন গল্পসাহিত্যে মেলে। গ্রন্থকারগণের একাধিক গল্পে নারীকে কখনও নিজেই হত্যা কর্মে লিপ্ত হতে দেখা যায় আবার কখনও নানাবিধ ছলনার আশ্রয় নিয়ে কিংবা দাসীর সহায়তায় দুষ্কর্ম করতে দেখা যায়। পঞ্চতন্ত্রের 'ব্রাহ্মণ-ব্রাহ্মণী-পশুকথা'য় ও বেতালপঞ্চবিংশতির প্রথম উপাখ্যানে এমন উদাহরণ দেখা যায়। বেতালপঞ্চবিংশতির প্রথম উপাখ্যানে রাজকন্যা পদ্মাবতী আপন দাসীর সাথে মন্ত্রীপুত্রকে হত্যার পরিকল্পনা করে এবং দাসীর দ্বারা বিষ মিশ্রিত আহার প্রেরণ করে। গর্হিত এই সাহস আচরণের শাস্তি স্বরূপ পদ্মাবতীকে দেশ থেকে বিতাড়িত হতে দেখা যায়।^{১৫} উপরের আখ্যানগুলিতে তাদের বধরূপ গর্হিত এই সাহস আচরণের শাস্তি সবক্ষেত্রে মৃত্যুদণ্ড হয়নি। কিন্তু স্মৃতিশাস্ত্রের বিধান অনুযায়ী প্রাণহানিকর উত্তম সাহস বলে বিবেচিত এই অপরাধের শাস্তি প্রাণদণ্ড। বৃহস্পতি উত্তম সাহসকারীকে বধদণ্ড দিতে বলেছেন।^{১৬} পঞ্চতন্ত্রের মিত্রলাভের চতুর্থ আখ্যানে গুরুতর অপরাধ করলেও ব্রাহ্মণকে প্রাণদণ্ড দিতে নিষেধ করা হয়েছে। হত্যা করলেও ব্রাহ্মণ অবধ্য।^{১৭} অতীতকালে স্ত্রী ও পুরুষের ব্যভিচারকে অক্ষম্য অপরাধ বলে মনে করা হত। তা থেকে উৎপন্ন বিবাদকেই স্মৃতিশাস্ত্রে স্ত্রীসংগ্রহণ বলা হয়েছে। মনুর মতে, নিঃসম্পর্কিত কোনো স্ত্রীলোকের সাথে কেলি করা, তার কাপড়, অলংকারাদি, অঙ্গস্পর্শ করা, একাসনে বসা, একই শয্যায় উপবিষ্ট হওয়া- এগুলি সবই স্ত্রীসংগ্রহণ (মনু.৮.৩৫৭)। আখ্যান-উপাখ্যানগুলির সর্বত্রই পরস্ত্রীস্পর্শ-পরস্ত্রীকাতরতা-পরস্ত্রীসংসর্গের নিন্দা করা হয়েছে। কোনো কোনো ক্ষেত্রে এর শাস্তিপ্রসঙ্গটিও আলোচিত হয়েছে। বেতালপঞ্চবিংশতির দশম উপাখ্যানে পরস্ত্রীস্পর্শ শাস্ত্রানুযায়ী একটি সবিশেষ দোষ এমন উক্তি দেখা যায়। আলোচ্য গ্রন্থটির সপ্তদশ উপাখ্যানে পরস্ত্রী স্পর্শ বা গ্রহণকে অধর্ম বলে উল্লেখ করা হয়েছে।^{১৮}

^{১৪} মনুসংহিতা, ৯.২৩২

^{১৫} বেতালপঞ্চবিংশতি, পৃ.৫-৮

^{১৬} সাহসং পঞ্চাধা প্রোক্তং বধস্তত্রাধিকঃ স্মৃতঃ।

তৎকারিণো নার্বদমৈঃ শাস্য্য বধ্যাঃ প্রয়ত্নতঃ।। বৃহস্পতিস্মৃতি, ৯.২৩

^{১৭} পঞ্চতন্ত্র, পৃ.১২৬

^{১৮} তদেব, পৃ.১৫৩

অন্যের বস্তুকে প্রত্যক্ষ বা অপ্রত্যক্ষভাবে হরণ করাকে চৌর্য বলা হয়। স্মৃতিতে বিভিন্ন প্রকার চৌর্যের ভিন্ন ভিন্ন দণ্ডব্যবস্থা নির্দিষ্ট করা হয়েছে। যাজ্ঞবল্ক্য দ্রব্য মূল্য অনুযায়ী অপহর্তার বয়স ও শক্তি বিবেচনা করে দেশ-কালানুযায়ী চৌর্যের দণ্ডবিধান করতে বলেছেন।^{১৯} বিভিন্ন আখ্যান-গুলিতে বিভিন্ন অপরাধের একাধিক দৃষ্টান্ত পাওয়া যায়। এই সকল অপরাধগুলির মধ্যে আখ্যানে যে অপরাধটির প্রভূত দৃষ্টান্ত মেলে তা হল স্তেয় বা চৌর্য। স্মৃতিশাস্ত্রে চৌর্যের যে বিভাগটি উল্লিখিত হয়েছে তার অধিকাংশগুলিই বিভিন্ন আখ্যানগুলিতে পাওয়া যায়। *কথাসরিৎসাগরের* অলংকারবতী লম্বকে পঞ্চম তরঙ্গের শিশুচুরির উল্লেখ পাওয়া যায়। শক্তিযশলম্বকে গৃহপালিতপশু গাভীচুরির ন্যায় ঘটনা রয়েছে। *পঞ্চতন্ত্রের* কাকোলুকীয়ম্ এর 'ব্রাহ্মণচৌরপিশাচকথা'য় ব্রাহ্মণকে চোরদের হাত থেকে গবাদিপশু রক্ষা করতে দেখা যায়। *কথাসরিৎসাগরের* মদনমঞ্জুকা লম্বকের তৃতীয় তরঙ্গের 'হরিশর্মাধিজের কাহিনি'তে পরিচারিকা কর্তৃক গৃহের মহামূল্যবান অলংকারাদি চুরি হওয়ার ঘটনা দেখা যায়। *পুরুষপরীক্ষায়* হাসবিদ্যকথায় ধনী ব্যক্তির গৃহে সিঁধ কেটে চুরি করার সময়ে চোরেরা নগর রক্ষকদের হাতে ধরা পড়েছে। *কথাসরিৎসাগরের* মদনমঞ্জুকা লম্বকের চতুর্থ তরঙ্গে গুণ্ডধন চুরির একটি দৃষ্টান্ত দেখা যায়। স্মৃতিতে উল্লিখিত সকল প্রকার চৌর্যের দৃষ্টান্তই আখ্যানে দৃষ্ট হয়। চৌর্যাপরাধীর দণ্ডবিধান এবং চৌর্যাপরাধে অভিযুক্ত ব্যক্তি প্রকৃত অপরাধী কি না তা নির্ধারণ কৌশলেও স্মৃতিবিহিত কৌশলের ছাপ স্পষ্ট।^{২০} তাই কেবল সন্দেহের কারণ কাউকে চোর বলে শাস্তি দেওয়া যুক্তিযুক্ত নয়। *দশকুমারচরিতের* সোমদণ্ডচরিতের আখ্যানটিতেও প্রকৃত চোর অনুসন্ধানে যথাবিধি এই কৌশলই অবলম্বন করা হয়েছে। আখ্যান উপাখ্যানগুলিতে চৌর্যের প্রভূত দৃষ্টান্তের মধ্যে-সিঁধ কেটে চুরির একাধিক দৃষ্টান্ত পাওয়া যায়। *দশকুমারচরিতের* অপহারবর্মাচরিতে সিঁধ কেটে চুরির বিস্তৃত আলোচনা করা হয়েছে। তৎসম্বন্ধে যুক্ত ব্যক্তিদের নৃশংসতার পরিচয় *কথাসরিৎসাগরের* নরবাহনদণ্ডজনন লম্বকের দ্বিতীয় তরঙ্গের একটি আখ্যানে ও *দশকুমারচরিতের* পূর্বপীঠিকার

^{১৯} ক্ষুদ্রমধ্যমহাদ্রব্যহরণে সারতো দমঃ।

দেশকালবয়ঃশক্তিং সংচিন্ত্য দণ্ডকর্মণি।। *যাজ্ঞবল্ক্যসংহিতা*, ২.২৭৫

^{২০} হিস্ট্রি অফ ধর্মশাস্ত্র, ভল্যু. ৩, পৃ. ৫২৫

কুমারোৎপত্তি নামক প্রথমোচ্ছ্বাসেও দেখা যায়। এই অপরাধে সংযুক্ত ব্যক্তিদের শাস্তিবিধান সম্পর্কে আখ্যান ও স্মৃতিতে বিশেষ কঠোরতা অবলম্বন করতে দেখা যায়। যাঙ্গবল্ক্য অসাধারণ ব্যবহারমাতৃকা প্রকরণে যে সকল বিবাদগুলির বিচারকালে কালবিলম্ব না করেই প্রত্যর্থীকে দিয়ে উত্তর দেওয়াতে বলেছেন তার মধ্যে চৌর্য অন্যতম (১২.২.যাঙ্গ)। পুরুষপরীক্ষার চৌরকথায়ও একই কথা বলা হয়েছে।^{২১}

❖ ষষ্ঠ অধ্যায়- প্রকীর্ত্ত ব্যবহারবিধি ও আখ্যানসাহিত্যে প্রতিফলিত অপরাধ প্রবণতা

প্র-পূর্বক কৃধাতুর উত্তর জ্ঞপ্রত্যয় করে প্রকীর্ত্ত শব্দটি নিষ্পন্ন হয়েছে। শব্দটির অর্থ হল বিক্ষিপ্ত, অসম্বন্ধ, মিশ্রিত নানা জাতীয় ইত্যাদি। বিষ্ণু বলেছেন- ‘যদনুক্তং তৎপ্রকীর্ত্তকম্’। যা পূর্বে বলা হয়নি অথচ বলা প্রয়োজন এমন বিষয় সমূহকে প্রকীর্ত্ত বিভাগে অন্তর্ভুক্ত করে আলোচনা করা হয়। শাস্ত্রকারগণ কর্তৃক নির্ধারিত বিবাদপদের অন্তর্ভুক্ত নয় অথচ অপরাধের সমতুল্য, যে গুলি পূর্বে উল্লিখিত হয়নি কিন্তু উল্লেখ করা আবশ্যিক এমন ভিন্ন ভিন্ন অপরাধ ও তার দণ্ড বিধি আলোচ্য অধ্যায়টিতে আলোচনা করা হয়েছে। মানুষের ক্রিয়ার নানা প্রকার হেতু যেহেতু বিবাদগুলি শতশাখ হয় তাই সকল অপরাধকে নির্দিষ্ট কতগুলি বিবাদপদের আওতাভুক্ত করা সম্ভব নয়। আলোচ্য অধ্যায়ে এইরূপ কতগুলি জঘন্য অপরাধের উল্লেখ করা হয়েছে। আখ্যান-উপাখ্যানগুলিতে অতিথির অনাদর করাকে একটি অন্যতম অপরাধ বলে উল্লেখ করা হয়েছে। অতিথির অনাদর করলে নরকবাস হয়, ইহা গৃহস্থের ধর্ম।^{২২} কোনো ব্যক্তির সাথে বিশ্বাসঘাতকতা করাকে কেবল নিন্দা করা হয়েছে এমন নয়, এটিকে একটি অপরাধ বলেও চিহ্নিত করা হয়েছে। দশকুমারচরিতের অর্থপালচরিতে বিশ্বাসভঙ্গকারী ব্যক্তির মৃত্যুদণ্ডরূপ শাস্তির উল্লেখ করা হয়েছে। এছাড়াও আখ্যানগ্রন্থগুলিতে পরিবারের দায়িত্ব উল্লঙ্ঘন করাকে, পিতা-মাতার অবমাননা করাকে শাস্তিযোগ্য অপরাধ বলে বিবেচনা করা হয়েছে। আখ্যানসাহিত্যে একটি বৃহৎ অংশজুড়ে বেশ্যাবৃত্তিধারী গণিকা, তার সহকারী কুউনী গণিকালয়ের পাহারাদার এদের অপরাধপ্রবণতা ও

^{২১} বর্ণা ভট্টাচার্য, পুরুষপরীক্ষা, পৃ.২৮

^{২২} পঞ্চতন্ত্র, পৃ.১৮০

চারিত্রিক দোষ, মিথ্যা অভিযোগ করা, উপনায়কের ধন অপহরণ করা ইত্যাদি সম্পর্কে আলোচনা দেখা যায়। আখ্যানগুলিতে আত্মহত্যাকে একটি মহাপাপ বলে সম্বোধিত করা হয়েছে এবং একে একটি শাস্তি যোগ্য অপরাধ বলেও চিহ্নিত করা হয়েছে। এছাড়াও সাধু-সজ্জন ব্যক্তিদের কামপরবশ হয়ে কিংবা লোভের বশবর্তী হয়ে অপরাধে লিপ্ত হওয়ার দৃষ্টান্ত, পিতামাতার সন্তানের প্রতি অন্যায় আচরণ, সচ্চরিত্রা স্ত্রীর ভরণপোষণের দায় অস্বীকার তথা পতিব্রতা স্ত্রীকে পরিত্যাগ কিংবা গৃহ থেকে বহিষ্কার করাকে অন্যায় ও অপরাধ বলে গণ্য করা হয়েছে।

❖ উপসংহার

বিশাল সংস্কৃত সাহিত্যের একটি অন্যতম অংশ হল আখ্যানসাহিত্য। পশু-পক্ষীদের পাত্র-পাত্রীরূপে নির্বাচন করে কাহিনিগুলি রচিত হলেও, এই সকল প্রাণীদের দ্বারা আসলে মানবিক প্রবৃত্তির – প্রক্লেভসমূহকেই প্রকাশ করা হয়েছে। সরস আখ্যানগুলি আসলে সামাজিক পরিবেশ-পরিস্থিতির সার্থক প্রতিরূপ। সমাজে নিরন্তর ঘটে চলা নানাবিধ অন্যায়-অপরাধে এক লিখিত দলিল স্বরূপ। আখ্যানগুলি থেকে বিভিন্ন বিবাদের দৃষ্টান্ত, বিবাদ নিরসন পদ্ধতি, দণ্ডবিধি, বিচারক ও বিচারকার্যে সহায়তাকারী ব্যক্তিগণের যোগ্যতা, অধিকার ইত্যাদি সম্পর্কিত প্রভূত তথ্য সমূহ পাওয়া যায়- যা থেকে প্রাচীন ভারতের বিচারব্যবস্থার স্বরূপ সম্পর্কে একটি স্পষ্ট ধারণা লাভ করা যায়। আলোচ্য গবেষণা নিবন্ধটি দ্বারা এই প্রয়াসই করা হয়েছে। বিচারকরূপে রাজাই ছিলেন প্রধান। তবে রাজাকর্তৃক নিযুক্ত যোগ্য ব্যক্তি প্রাড্বিবাকও বিচারকার্য পরিচালনা করতে পারতেন। *বত্রিশসিংহাসনের* একত্রিশ উপাখ্যানটি রাজা ও সভাসদকর্তৃক পরিচালিত সুষ্ঠু বিচারব্যবস্থার একটি দৃষ্টান্তস্বরূপ। প্রমাণের দ্বারা সঠিকভাবে চতুস্পাদের মাধ্যমে বিবাদ নিরসনের দৃষ্টান্তও এখানে মেলে। স্মৃতিতে বিবাদপদের যে সংজ্ঞাটি মেলে *পঞ্চতন্ত্রের* ‘শশ-কপিঞ্জলকথা’য় তারই প্রতিফলন দেখা যায়।^{২০} বিচারকালে কখন কোন প্রমাণ প্রয়োগ করা উচিত তার একটি সঠিক নির্দেশও *পঞ্চতন্ত্রে* মেলে। যা বিচারপ্রক্রিয়ার দৃঢ়তাকেই প্রমাণ করে। আখ্যানগুলিতে ধনমূলক ও

^{২০} *পঞ্চতন্ত্র*, পৃ. ৪৯৭,

ড. *যাঙ্গবল্ল্যসংহিতা*, ২.১

हिंसामूलक एकाधिक विवाद संघटित हते देखा যায় এবং एগুলिर उपयुक्त शक्तिविधिও दृष्ट হয়। या देखे बोवाा যায় प्राचीनकालेও এই सकल विवाद प्रचलित छिल এবং प्राचीनकालेও तार सुछु दणुव्यवस्था छिल। तबे सकल आख्यानेई ये अपराधीर शक्ति दर्शित हयेछे एमन नय, कोथाओ कोथाओ मृत्युर परओ दणु पेते हय एमन निर्देशओ देओया हयेछे।

ग्रन्थपञ्जि

Aiyangar, Kumbakonam Viraraghava Rangaswami. *Vṛhaspatismṛti* (Reconstructed). Baroda: Baroda Oriental Institute, 1941. Print.

Altekar, A. S. *State and Government in Ancient India*. Delhi: Motilal Banarsi Dass Publishers, 2009 . Rpt.

Apte, Vaman Shivram. *The Student's Sanskrit English Dictionary : Containing Appendices on Sanskrit Prosody and Important Literary and Geographical Names in the Ancient History of India*. Delhi: MLBD, 2015(13th ed.rpt.). Print.

Bandyopadhyaya, Ashok Kumar, (Ed.) *Ūnavimṣati Samḥitā*. Comp. and Trans. Panchanan Tarkaratna. Kolkata: SPB, 1407 BS. Print.

Bandyopadhyaya, Haricharan. *Baṅgīya Śabdakoṣ(a)*, Vol. I and II. New Delhi: Sahitya Academy, 2016. Print.

Bandyopadhyay, Manabendu. *Manusamḥitā*. Kolkata: SPB, 1416 BY (2nd Ed.). Print.

Basu, Ratna. *Methodology and Sanskrit Research*. Calcutta: Rabindra Bharati University, 1998. Print.

Basu, Sumita. *Dharma-Artha-Nītiśāstrasamīkṣā: A Critical Survey of Dharmaśāstra and Nītiśāstra*. Kolkata: Sadesha, 2006. Print.

-.-. *Yājñavalkyasamḥitā: Vyavahārādhyāya: A book of Ancient Indian law*. Kolkata: SPB, 1407 BS. Print.

Bhattacharjee, S.N. *Administration of law and Justice in India*. Burdwan: The University of Burdwan, 1982. Print.

Bhattacharyya, Haridas Sidhantavagis. (Ed.) Beng. Trans. With com. *Mahābhāratam*. Calcutta: Viswavani Prakasani, 1400 BS.Print.

Bhattacharyya, Bhabotosh. *Studies in Dharmasāstra*. Calcutta: Indian Studies, 1964. Print.

Biswas, Sailendra, Comp. *Samsad Bengali English Dictionary*. Kolkata: Sahitya Samsad, 2000. Print.

Tripathi, Ramakanta. (Ed. with com.) *Śukasaptati*. Varanasi: Chaukhambha Sanskrit Series Office, 2002. Print.

Das, Keshab Chandra. *Methodology in Sanskrit*. Varanasi: Chaukhambha Sanskrit Sansthan, 1992. Print.

Jibananda, Ed. *Dharmasāstra Samgraha: Atri, Viṣṇu, Yājñavalkya, Uśanā, Anṅirā, Kātyāyana, Br̥haspati, Parāśara, Vyāsa, Śaṅkha Likhita, Dakṣa, Gautama, Śātātapa, Vasiṣṭha*. Calcutta: Sanskrit College, 1876.PDF.

Kane, Pandurang Vaman. *History of Dharmasāstra: Ancient and Mediaeval Religious and Civill law, Vol. I & III*. Poona: Bhandarkar Oriental Research Institute, 1930. PDF.

.-.-.-. *Kātyāyanasmṛti on Vyavahāra*. Text. (Reconstructed), Trans. Bombay: Sanskrit Sahitya Parisad, 1933. Print.

Kale, M.R. (Ed. with com.) *Hitopadeśa of Nārāyaṇaśarmā*. Delhi/Varanasi/Patna: Motilal Banarasidas Publishers (Pvt. Ltd.). 2014. Rpt.

-.-.-. *Pañcatantra of Viṣṇuśarmā*. Delhi/Varanasi/Patna: MLBD Publishers (Pvt. Ltd.), 2008.Rpt.

Kangle, R.P. (Ed. & Eng.trns). *The Kautiḥya-Arthaśāstra* (Vol. I-III). Delhi: MLBD Publishers (Pvt. Ltd.),2006. Rpt.

Keith, A. B. *A History of Sanskrit Literature*. Great Britain: Oxford University Press, 1928. Print.

Malabiya, Sudhakar (Ed.) *Pañcatantra of Viṣṇuśarmā*. Varanasi: Chowkhamba Krishnadas Academy.2015.

Jha, Damodar. *Vetālapañchaviṃśati of Śibadāsa*. Ed. With com. Varanasi: Chowkhamba Vidyabhawan, 1968. Print.

বাংলা গ্রন্থ

কুণ্ডু .পুরীপ্রিয়া ,*চৌর্যসমীক্ষা*কলকাতা :: সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার .(বঙ্গাব্দ) ১৪২১ ,

গোপ .যুধিষ্ঠির ,*বৈদিক সাহিত্যের ইতিহাস*কলকাতা :: সংস্কৃত বুক ডিপো.(.মু.পুন) ২০১২ ,

ঘোষ .ঈশানচন্দ্র ,*জাতককথা*. কলকাতা: করুণা প্রকাশনী(বঙ্গাব্দ) ১৩৮৫ ,, পুন.মু.

চক্রবর্তী) .সত্যনারায়ণ ,সম্পা(.ও অনু .*হিতোপদেশ*কলকাতা :: সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডারয় ৩) ২০১২ ,
সং.) মুদ্রিত.

চাকী .জ্যোতিভূষণ ,*সংস্কৃত সাহিত্য সম্ভারম*৭) . খণ্ডকলকাতা .(: নবপত্র প্রকাশন .১৯৮২ ,

धर्मपाल .रोहिणी ,अपराध ओ अपराधीर पुरोनतुन काहिनिकलकता .: संस्कृत पुस्तक भाण्णर ,
.२०२०

बन्द्यापाध्याय .धीरेन्द्रनाथ ,संस्कृत साहित्येर इतिहासकलकता .: पश्चिमवङ्ग राज्य पुस्तक पर्षद ,
. (मु.पुन) २००७

बन्द्यापाध्याय .शान्ति ,वैदिक साहित्येर रूपरेखा. कलकता: संस्कृत पुस्तक भाण्णर २००७ ,
य३).सं. (.

.---वैदिक पाठसंकलनकलकता .: सदेशर्ष४) १४१८ ,मु. (.

विश्वास ,हीरेन्द्रलाल (.ओ अनु .सम्पा) कथासरिङ्गागरकलकता .: एकाडेमिक पाबलिसार्स .१९५९ ,
विश्वनाथ .साहित्यदर्पण (खण्ड१)). सम्पादिनी .योगेश्वर दत्तशर्मा पराशर .: नाग पाबलिसार्स १९९९ ,
म१).सं. (.

य खण्ड२) ----.----). सम्पादिनी .योगेश्वर दत्तशर्मा पराशर .: नाग पाबलिसार्सम१) २००० ,सं. (.

भट्टाचार्य .भवानीप्रसाद एबं तारकनाथ अधिकारी ,वैदिक संकलन (खण्ड२ म ७१)). कलकता:
संस्कृत बुक डिपो.२०१९ ,

भट्टाचार्यकलकता ..ओ अनु .सम्पा .पुरुषपरिष्का .वर्णा .: संस्कृत पुस्तक भाण्णर.२०१५ ,

मण्डल .देवदास ,गल्ले गल्ले राजनीतिर हातेखड्कलकता .: संस्कृत पुस्तक भाण्णर.२०१८ ,

साहा .विश्वरूप ,धर्मार्थशास्त्र परिचयकलकता .: सदेश .२००९ ,

सेन .मलयेन्द्रकुमार ,ब्रिशासिंहासनकलकता .: कालकाटा पाबलिकेशनस्वप्पाद १७८४ ,

सङ्कृत आख्यानसाहित्ये विचारव्यवहार उपादान अनुसन्धान
